Class - I. Com XII
Subject - EPS
Topic - Selection of an Enterprise
Lecture - 10
Prepared by - Dr C P Sahu
Marwari College - DARBHANGA

उपक्रम का चुनाव :-

(1)

व्यवसाय पृथ्वी पर सबसे महत्वपूर्ण क्रिया है। यह वह आधारशिला है जिस पर संस्कृति का निर्माण होता है। वास्तव में धर्म, समाज, शिक्षा - सबका मूल आधार व्यवसाय ही है।

अब ध्यान देने की बात है कि व्यवसाय के लिए किस प्रकार का उपक्रम होना चाहिए उसका स्वरूप कैसा हो। उपक्रम का चुनाव करते समय उत्पादन की प्रकृति, मात्रा, साहसी की स्वयं की योग्यता, क्षमता, सामर्थ्य संसाधन इत्यादि पर निर्भर करता है। व्यवसाय के लिए एकाकी व्यापार, साझेदारी, संयुक्त हिन्दू परिवार एवं संयुक्त कंपनी इत्यादि में से किसी एक का चुनाव किया जा सकता है। उपक्रम का चुनाव कोई मनगढ़न्त विचार नहीं होता बल्कि यह सुनियोजित योजना की तरह होना चाहिए। उपक्रम का संगठन साहसी के अधिकार एवं दायित्व को निर्धारित करता है। यह कार्य सोच समझकर करना चाहिए क्योंकि एक बार एक संगठन को चुन लेने के बाद फिर परिवर्तन करना मुश्किल हो जाता है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि व्यवसाय या उपक्रम के चुनाव में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है :-

(1) स्थापना में आसानी - यदि कोई व्यवसाय शीघ्र स्थापित करना है तो उसके लिए एकाकी व्यवसाय ही सही होगा क्योंकि इसमें एक ही मालिक होता है। साझेदारी व्यापार के लिए दो या दो से अधिक साझेदार की जरूरत होती है तथा कंपनी की स्थापना के लिए अनेक वैधानिक

Scanned with CamScanner

औपचारिकताओं का पालन करना पड़ता है तथा इसका पंजीयन कराना पड़ता है अतः साहसी को सोच समझकर किया करना चाहिए क्योंकि सभी स्वरूपों के अपने गुण-दोष होते हैं।

(2) व्यावसायिक क्रिया के प्रकार :- यदि व्यापार छोटे स्तर का या व्यक्तिगत सेवा, नाई, दर्जी, जौहरी आदि से संबंधित हो तो एकाकी व्यापार ही सही होगा। यदि बड़े पैमाने पर करना हो तो साझेदारी या कंपनी ठीक होगा।

(3) प्रत्यक्ष नियंत्रण - यदि साहसी व्यापार पर अपना प्रत्यक्ष नियंत्रण रखना चाहता है तो एकाकी व्यापार वाले व्यवसाय का चुनाव करना चाहिए।

(4) परिचालन का क्षेत्र - व्यापार का परिचालन क्षेत्र छोटा हो तो एकाकी व्यापार या क्षेत्र बड़ा हो तो साझेदारी या कंपनी वाले व्यवसाय का चुनाव करना चाहिए।

(5) पूंजी - व्यवसाय आरंभ करते समय पूंजी पर ध्यान देना चाहिए कम पूंजी हो तो एकाकी व्यापार या अधिक पूंजी हो तो साझेदारी या कंपनी का व्यापार करना चाहिए।

(6) गोपनीयता - एकाकी व्यवसाय में एक ही मालिक रहने के कारण गोपनीयता बनी रहती है वहीं साझेदारी एवं कंपनी में अधिक व्यक्ति रहने कारण गोपनीयता नहीं रहती है।

(7) सरकारी नियमन - एकाकी व्यापार और साझेदारी छोटे व्यवसाय के लिए होते हैं इनपर सरकारी नियंत्रण कम रहता है जबकि कंपनी वाले व्यवसाय बड़े होने के कारण अत्यधिक कानूनी अड़चनों का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार उपर्युक्त बातों पर ध्यान देते के बाद ही किसी भी व्यवसाय का चुनाव करना चाहिए। किसी ऐसे प्रकार का चुनाव करना चाहिए जिससे साहसी स्वयं का भविष्य उज्जवल कर सके।